10

कैसे जोड़ें अकादमिक शिक्षा और काम को

विश्व विजया सिंह*

बच्चे अपनी सहजवृत्तियों के द्वारा बहुत कुछ सीखते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक उन्हें इसके अवसर दे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 भी ज्ञान को बाहर की दुनिया से जोड़ने का सुझाव देती है। वास्तव में सिर्फ़ किताबी सूचनाओं का संप्रेषण ही ज्ञान नहीं है बल्कि वास्तविक जीवन में उसके उपयोग मायने रखते हैं। उक्त आलेख बच्चों के आरंभिक जीवन में स्वानुभव के द्वारा सीखने पर आधारित है।

पूर्व प्राथमिक कक्षा में प्रवेश लेने पर जब बच्चे की आयु 3-4 वर्ष होती है, छोटे-छोटे काम बच्चों को सौंपे जाएँ तो वे उनको करने में आनंद और संतुष्टि का अनुभव करते हैं और इस तरह उन्हें हाथ से काम करने की आदत बनती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार ''बच्चे काम के द्वारा अपनी एक अस्मिता पाते हैं और स्वयं को उपयोगी और महत्त्वपूर्ण समझते हैं क्योंकि काम उनको अर्थवान् बनाता है और इसके माध्यम से वे समाज का हिस्सा बनते हैं और ज्ञान के निर्माण में सक्षम हो पाते है।''

प्रश्न यह उठता है कि यह कैसे संभव हो? अपने विद्यालय में प्रचलित कुछ प्रयोगों का उल्लेख करना चाहूँगी।

हमारे स्कूल में नर्सरी कक्षाओं का समय कुछ अधिक रखा गया है, उसका कारण है कि मध्यांतर में भोजनोपरांत बच्चों के विश्राम के लिए भी समय निर्धारित है। सत्रारंभ में ही प्रत्येक बच्चे के घर से एक छोटी दरी, एक चद्दर और एक छोटा तकिया मंगाया जाता है। एक छोटा कक्ष, जिसमें खुली अल्मारियों में खंड बने हुए हैं, 'बिस्तर घर' कहलाता है। इसी कक्ष में कक्षावार बच्चों के बिस्तर रखे जाते है। बिलकुल आरंभ से ही बच्चों को स्वयं अपना बिस्तर, जो कि हल्का ही होता है, लाकर बड़ी दरी पर बिछाकर लेटना होता है। बच्चा अपने तकिया, चद्दर-दरी से एक जुड़ाव महसूस करता है और खुशी-खुशी अपना बिस्तर लाकर

* 17, टेक्नोक्रेट सोसायटी, बेदला रोड, पो.आ. बड़गाँव उदयपुर (राज.) 313011

बिछाता है। कुछ बच्चे तो सो जाते हैं, कुछ को नींद नहीं आती पर लेटना अर्थात् विश्राम सबके लिए आवश्यक है। इसके बाद अपनी चद्दर और दरी को तह बनाकर खुद ही जाकर बिस्तर घर में रखना होता है। बच्चे अपने नन्हें हाथों से यह काम बड़ी खुशी से करते हैं।

नर्सरी स्कूल परिसर में बिल्डिंग के चारों ओर काफ़ी खुला स्थान है। कुछ क्यारियों व गमलों में पौधे लगे हुए हैं। छोटे-छोटे झारों से बच्चे इन पौधों में पानी डालते हैं। एक नल जो उनकी ऊँचाई का बना है, उससे पानी भरकर झारों में आगे बनी जाली से निकलती पानी की धाराओं से पौधों को पानी पिलाना बच्चों को बड़ा रुचिकर काम लगता है। झारों की संख्या सीमित होती है हर बच्चा इस काम को पहले करना चाहता है, इसलिए शिक्षिका को उनकी बारी बाँधनी पड़ती है।

बच्चे अपना लंच बॉक्स घर से लाते हैं। डिब्बों से फुल्के आदि को निकालकर रखने के लिए प्लेट वहाँ उपलब्ध होती हैं, जो एक जगह पर रखी होती हैं। बच्चा स्वयं अपने लिए प्लेट उठाकर लाता है और भोजन समाप्ति पश्चात् प्लेट को एक बड़े टब में रखता है।

सत्र में एक-दो बार सब मिलकर स्कूल में ही खिचड़ी या तहरी बनाते हैं। बच्चों को एक दिन पूर्व कहा जाता है कि वे अगले दिन टिफ़िन न लाएँ। सब मिलकर खिचड़ी/तहरी बनाएँगे। सिर्फ़ एक मुठ्ठी चावल, एक आलू व एक प्याज़ ही लेकर आएँ, यदि खिचड़ी बनानी हो तो आलू प्याज़ की जगह एक मुठ्ठी दाल लानी होती है। मसाला व तेल आवश्यकतानुसार स्कूल से मँगा लिया जाता है। टिफ़िन नहीं लाने और खुद कुछ करने की बात सुनकर ही बच्चे अत्यंत उत्साहित हो जाते हैं।

दूसरे दिन बच्चे बस्ते से निकालकर वे चीज़े निर्धारित स्थान पर एकत्र कर लेते हैं। खिचड़ी के लिए लायी गयी अलग-अलग तरह की दालें और विभिन्न प्रकार के चावल, बासमती से लेकर मोटा चावल, किनकी चावल और सेला चावल भी सब एक भगोने में मिलकर जैसे समन्वय और हमारी संस्कृति की विभिन्नता में एकता के भाव को प्रकट करते हैं।

स्कूल का कैंपस बहुत बड़ा है, जिसमें बड़े-बड़े पेड़ व झाड़ियाँ हैं। कुछ बच्चों को सुखी लकड़ियाँ बीनकर लाने का काम सौंपा जाता है। आमतौर पर बच्चे उत्साहवश आवश्यकता से अधिक लकड़ी इकठ्ठी कर लेते हैं। मिट्टी खोदकर, पत्थर इकठ्ठे करके चपरासी की मदद से चूल्हा तैयार किया जाता है।

कुछ बच्चे चावल, दाल बीनने या आलू-प्याज़ छीलने में जुट जाते हैं। कुछ सलाद भी काट लिया जाता है। शिक्षिकाओं के सहयोग से खिचड़ी/तहरी बनती है। और सब बड़े चाव से खाते हैं।

जब बच्चा अपने व्यवहारिक जीवन संबंधी कार्यों के अंतर्गत छोटे-छोटे काम अपने हाथ से करता है तो उसके स्नायु तंत्र के विकास के साथ-साथ उसे एक आत्मसंतोष मिलता है और उसमें कोई भी काम कर पाने का आत्मविश्वास पैदा होता है।

कक्षा 3 से आगे बच्चों को एक दिवसीय रात्रि कैंप – हाइक आदि में जाना होता है।

जिसमें बच्चे बहुत से काम मिलजुलकर करते हैं। उससे पूर्व इस तरह के सम्मिलित भोज का अनुभव बड़ा लाभकारी रहता है।

कक्षा 4 से आरंभ करके कक्षा 11 तक के विद्यार्थियों को 8-9 दिन के लिए स्कूल से बाहर किसी प्राकृतिक स्थान पर ले जाया जाता है। जिसे हम लोग 'वनशाला' कहते हैं। यह एक साधारण कैंप नहीं वरन् वन में शाला है। वह तीन समूहों में अर्थात् कक्षा 4 व 5, 6 से 8 और 9 से 11 के लिए आयोजित किया जाता है। अध्ययन, अवलोकन, भ्रमण के अतिरिक्त बच्चे बहुत-से काम वनशाला में स्वयं करते हैं। यहाँ प्राथमिक स्तर की ही बात की जा रही है।

कक्षा 4-5 के बच्चों को जब पहली बार वनशाला ले जाने की तैयारी शुरू होती है तो उन्हें बताया जाता है कि अपना सामान उन्हें खुद उठाना है, अपने कपड़े स्वयं धोने हैं, बर्तन खुद साफ़ करने हैं। बच्चे यह सब सुनकर कहीं से परेशान नज़र नहीं आते। पर कई अभिभावकों की दुश्चिंताओं व सवालों के जवाब हमें अवश्य देने पड़ते हैं, यथा - ''इसने तो कभी अपने कपड़े धोए नहीं, ये कैसे धोएगा?'' ''अपनी अटैची और बेडिंग अकेला कैसा उठाएगा?'' हम उन्हें बताते हैं सब हो जाता है। बच्चों को तो इस सब कामों में बहुत मज़ा आता है। वे सामान को उठाकर रखने में एक-दूसरे की मदद करते हैं। पहली बार वनशाला जाने और वहाँ से वापस आकर वहाँ की बातें खुशी-खुशी बताने तक अभिभावकों को इन बातों पर जल्दी विश्वास नहीं होता। आगे की कक्षाओं के लिए तो वे निश्चिंत हो जाते हैं और बच्चे भी एक बार वनशाला का अनुभव प्राप्त करने के बाद दुगने उत्साह से अगली वनशाला की प्रतीक्षा करते हैं।

वनशाला स्थल की सफ़ाई और सज्जा भी बच्चे बड़ी रुचि से करते हैं। कोई झाड़ू लगा रहा है। अपना-अपना सामान तरीके से जमा रहे हैं। वहीं उपलब्ध साधारण फूल-पत्ते, मोर पंख आदि से थोड़ी बहुत सजावट भी कर लेते हैं।

वनशाला में बड़े स्तर पर तैयार किए जाने वाला भोजन तो वयस्कों द्वारा बनाया जाता है, किंतु परोसगारी का काम बच्चे करते हैं। भोजन के लिए टाटपट्टी बिछाकर बच्चे पंक्तिबद्ध बैठ जाते हैं। परोसगारी की ज़िम्मेदारी एक श्रेणी या समूह की होती है, जो बदलती रहती है। बच्चे बड़े उत्साह और मनोयोग से यह काम करते हैं।

भोजनोपरांत सभी बच्चों और शिक्षकों को भी अपने बर्तन खुद साफ़ करने होते हैं। कुछ बच्चे तो अपनी थाली, कटोरियाँ, गिलास खूब रगड़-रगड़कर चमकाते दिखते हैं। काम सौंपने पर बच्चे किसी भी काम को बहुत रुचि व कुशलता से कर लेते हैं। ज़रूरत है कि हम उन्हें ऐसे अवसर प्रदान करें और हमें उनकी क्षमताओं में विश्वास हो।

कक्षा 3 से 5 के विद्यार्थियों के लिए श्रमदान अनिवार्य है। परिसर में उनके लिए कक्षावार स्थान निर्धारित कर दिया जाता है, जहाँ वे क्यारियाँ बनाकर गाजर, मूली, टमाटर आदि बोते हैं। कुछ मौसमी फूलों के पौधे भी लगा सकते हैं। पानी पिलाने व पौधों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी उनकी स्वयं की होती है। धीरे-धीरे

बढ़ते पौधों को देखकर वे खुश होते हैं। गाजर-मूली आदि निकालने पर लंच के समय मिल बाँटकर खाते हुए वे आनंदित होते हैं। इस तरह वे जो भी अनुभव प्राप्त करते है, वह महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार ''बच्चों की आयु व योग्यता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया, उपयोगी काम उनके सामान्य विकास में तो योगदान देता ही है, साथ ही जब उसे विद्यार्थियों के जीवन पर लागू किया जाता है तो वह उनके लिए मूल्यों, बुनियादी वैज्ञानिक अवधारणाओं, कौशलों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के कारक के रूप में काम करता है। अकादमिक शिक्षा और काम को जब साथ-साथ जोड़ दिया जाए तो उससे अकादमिक ज्ञान में रचनात्मक और काम के क्षेत्र में भी अधिक सहजता आएगी। एक सहक्रियात्मक दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है।''

''महात्मा गाँधी का कहना था शिक्षा का संबंध जीवन से है अत: शिक्षा और जीवन का आपसी तालमेल ठीक होना चाहिए। क्रियात्मकता का संचार होना चाहिए।

मनुष्य में रचनात्मक प्रवृत्तियों का, स्वयं अपने हाथ से काम करके जीवन की आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन करने की क्षमता का विकास होगा - तब शोषण की प्रवृत्ति मिटेगी।

अत: हिंसा को दूर करने के लिए शोषण की प्रवृत्ति को ही मिटाना होगा।''

हर स्तर पर इस दिशा में सोचने व सुनियोजित कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है। जब हम इसे व्यवहार में लागू करेंगे तो नए-नए और कुछ मौलिक विचार सामने आएँगे। तभी अकादमिक शिक्षा का काम से जुड़ाव होगा। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि काम मानव जीवन को समृद्ध बनाता है और आनंद के नए आयाम सामने रखता है।

❑❑❑